अन्तरा-शब्दशक्ति

रंग बरसे

सांझा काव्य संग्रह

संपादक - डॉ. प्रीति सुराना

www.antrashabdshakti.com

रंग बरसे,..!

(साझा काव्य संग्रह)

संपादक
डॉ. प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-022-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- डॉ. प्रीति सुराना

मूल्य - १३५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

RANG BARSE,..! EDITED BY DR. PRITI SURANA

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1. रंग बरसे,..!/ डॉ प्रीति सुराना 7
2. इस बार होली में/ कीर्ती प्रदीप वर्मा 9
3. अबकी होली में/ राजेंद्र श्रीवास्तव 10
4. मतवाली होली/देवयानी नायक 11
5. वृंदावन की होली/साधना छिरोल्या 12
6. होली के दोहे/सुनीता लुल्ला 13
7. आयो फागुन माह सखी/डॉ सरला सिंह 14
8. होलिका दहन/नवनीता दुबे 'नूपुर' 15
9. कैसे मनाऊँ श्याम होली/ अदिति रूसिया 16
10. रंग लगा ले/शैली जैन 17
11. होली गीत/बबिता चौबे 18
12. रँग रहा हूँ मैं/हेमन्त बोर्डिया 19
13. फिर से आई पागल,होली!/जयकृष्ण चांडक 'जय' 20
14. होली के त्योहार पर/ नरेंद्रपाल जैन 21
15. होली है भाई होली है/निधि रूसिया बड़ेरिया 22
16. जाने क्यों? /पूनम (कतरियार) 23
17. होली के रंग जीवन के संग/सीता गुप्ता 24
18. होली पर इस बार,..!/पिंकी परुथी 'अनामिका' 25
19. हे पलाश/डॉ चंतद्रकांति आदित्य त्रिपाठी 26
20. प्यारी होली आई है/मंजू सरावगी 27
21. होली,..एकता की थाती /आरती डोंगरे 28

22. फागुन की धूम/ बबीता कंसल 29
23. होली उसव मनाइये/मनोरमा चंद्रा 30
24. होलिया में करूँ मनुहार/ नीरजा मेहता 'कमलिनी' 31
25. होली खेले मोहन/सुधा शर्मा 32
26. मेरे बांके बिहारी लाल/केवरा यदु 'मीरा' 33
27. होली भी आएगी/ हरि प्रकाश गुप्ता 34
28. इस होली,.. /मीनाक्षी सुकुमारन 35
29. फागुन गीत/डॉ. वर्षा चौबे 36
30. होली का स्वप्न/ब्रजेश शर्मा 'विफल' 37
31. जब-जब होली आती है/आभा दवे 38
32. देखो होली आई है/ नमिता दुबे 39
33. मन फागुन-फागुन हो जाये/ अनीता सिद्धि 40
34. होली का त्योहार/रेखा ताम्रकार 'राज' 41
35. आ गया है मधुमास/वंदना दुबे 42
36. होली का उपहार/नवनीता कटकवार 43
37. सबरंग/नवीन जैन 'अकेला' 44
38. होली खेलो प्रेम से/अर्चना कटारे 45
39. होली का रंग/साधना मिश्रा 46
40. सांवरिया जी होली खेले/कैलाश बिहारी सिंघल 47
41. सांवरे के रंग में/ जागृति मिश्रा 'रानी' 48
42. कैसे रंग लगाऊँ मैं?/गणतंत्र 'ओजस्वी' 49
43. रंगों का त्योहार/मीना विवेक जैन 50

44. होली आएगी/रचना उपाध्याय 51
45. नेह की बारिश/रजनी शर्मा 52
46. बसंत-रंगोत्सव(ताँका पंच)/राजेन्द्र जैन 'अनेकांत' 53
47. आओ कोई एक रंग चुने/विवेक दुबे 'निश्चल' 54
48. गज़ब है रौनक/अंकित शुक्ला 55
49. पारसनाथ जायसवाल/होली की अभिलाषा 56
50. होली मनाएंगे/मनोरमा रतले 57
51. आओ होली आज मनाएं/किरण मोर 58
52. नेता जी संग होली/मुकेश मनमौजी 59
53. फागुन की बयार/डॉ वासिफ क़ाज़ी 60
54. देश की होली/शुभ्रा झा 61
55. रंग नहीं डारो/मधु तिवारी 62
56. एक संदेश/रचना सक्सेना 63
57. रंगो की बहार आई/कैलाश सोनी सार्थक 64
58. होली मैंने भी मनाकर देखी/आनंद पांडेय 'केवल' 65
59. यादों के अंतिम छोर से/सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा' 66
60. रंगों की टोली/नीता सक्सेना 67
61. संदेशा/बीना शर्मा 'झंकार' 68
62. होली की मस्ती में एच. एस. अरमो 'अरमान' 69
63. प्रेम का उड़े गुलाल/इति शिवहरे 70
64. होली/डॉ सुकेशिनी दीक्षित 71
65. सूना आँगन हुआ किसी का/रागिनी स्वर्णकार(शर्मा) 72
66. होली है/डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई 73
67. सुहानी होली/ भरत सिंह रावत 74
68. लाइफ के रंग/ कृति गुप्ता 76
69. न रहे बेरंग/डॉ. प्रीति सुराना 78

रंग बरसे,..!

काव्य में अनेक विधाएँ होती अलग-अलग है ढंग
जैसे अनगिन होते हैं होली में अजब-गजब से रंग
हंसी ठिठोली और बहुरंगी लिखी है सबने रचनाएँ
बुरा न मानो होली है पर क्या पीकर लिक्खी है भंग

होली पर हँसी-मजाक, मस्ती-छेड़खनियाँ तो होती ही है पर कभी कहीं बहुत भावुक कर देने वाली यादें भी, साजन के विरह गीत भी, फाग के गीत भी, रंगभरी बातें भी। स्वाभाविक है नौ रस हैं और अनेक विधाएँ तो होली की रचनाएँ भी बहुरंगी होंगी।

अन्तरा शब्दशक्ति परिवार में होली के तीन दिवसीय अनुष्ठान में दो दिवसीय हास्य, व्यंग्य, कहानियाँ, संस्मरण और काव्य के साथ तुकबंदियाँ और होली पर सदस्यों के नामकरण को "होली हुडदंग" (साझा संकलन) में सहेजा और उसी कड़ी में होली की कविताओं को सहेजने का एक प्रयास रंग बरसे (साझा काव्य संग्रह) है।

दैनिक गतिविधियों में से विवेकानंद एक आदर्श (युवा दिवस), स्त्री तुम सृजक (महिला दिवस), होली हुड़दंग (होलिका दहन) रंग बरसे,.. (होली) जैसे आयोजनों पर अप्रत्याशित इन साझा संग्रहों को बनाने के पीछे कारण केवल विशेष यादों को सहेज लेना भर नहीं है बल्कि इन अप्रत्याशित उपहारों जैसे संग्रहों से अन्तरा शब्दशक्ति की दैनिक गतिविधियों में रचनाकारों को और अच्छा लिखने को प्रेरित करने का उद्देश्य भी शामिल होता है। जो रचनाकार छूट जाते है उन्हें अगले संग्रह में आने की इच्छा लिखने को प्रेरित करती है।

आशा है यह सोच और यह प्रयास अन्तरा शब्दशक्ति परिवार को लेखन की एक नई विचारधारा से जोड़ने का प्रयास सिद्ध होगा।

ये सभी संग्रह ISBN सहित हैं। और ईबुक के रूप में www.antrashabdshakti.com में ईबुक के रूप में भी संग्रहित है। अतः इनमें शामिल रचनाकार अपने परिचय में साझा संकलनों में इन संग्रहों का नाम शामिल कर सकता है जो उनकी साहित्यिक परिचय और प्रकाशन की फेहरिश्त में भी वृद्धि करेंगी। होली पर यह छोटा सा किंतु अनोखा उपहार रचनाकारों के साथ पाठकों को भी पसंद आएगा ऐसी उम्मीद ही नहीं वरन विश्वास के साथ,..!

डॉ प्रीति सुराना
संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति
वारासिवनी (म. प्र.)
481331
मो. 9424765259

इस बार होली में

भुला दो नफरतें मन की सभी इस बार होली में

जो खेतों में पकी बाली
सरसों मन में हो फूली
पलाशों के सजा गजरे, किया शृंगार होली में।।

बिना रंगो के है लाली
सजी गोरी के गालों पे
जो संग हो सजनी के, बस भरतार होली में।।

कहीं देवर कहीं भाभी
कहीं जीजा कहीं साली
मजा आता नही तब तक. न हो तकरार होली मैं ।।

जला दो रंजिशें,कुढ़न
और डाह जितनी है
लगा दो प्यार का ही बस , अब अंबार होली में।।

अमन की ही सजे क्यारी
भाई चारे की फुलवारी,
भुला दो नफरतें मन की, सभी इस बार होली में।।

-कीर्ती प्रदीप वर्मा, बाबई (मप्र)

अबकी होली में

तन भीगा मन कोरा-कोरा, अबकी होली में।

जो पहले था रंग वही है।
फगुवारों का संग वही है।
रंग अबीर लगा देने का-
भाव वही है, ढंग वही है।
फिर भी वहआनंद नहीं, इस- हँसी-ठिठोली में।

हाँ! होली की आग वही है।
धमचक,भागम-भाग वही है।
वही राग-अनुराग पुराना
रस में डूबी फाग वही है।
फिर भी रूखापन झलका, इस बाणी-बोली में।

पिछले बरस यहाँ वह आया।
नयनन पैठ हृदय पर छाया।
जिसने मेरी एक न मानी-
बरजोरी कर रंग लगाया।
वही नहीं दिख रहा आज, इस नटखट टोली में।

तन भीगा मन कोरा-कोरा अबकी होली में।

राजेंद्र श्रीवास्तव

मतवाली होली

तुम सूखे ठूंठ से रहते
फिर भी देते फूल महकते
टेसू कनक कमलासन पर्णी
जाने कई तुम नामों से
जाने जाते केशरिया रंग लिये
कान्हा के दरबार में जाते
बन जाते जब रंग ये पक्के
नहीं छोड़ते ग्वाल बाल गोपियों से
रास लीला कर नचवा लेते
भिगो कर रख देते भक्ति में
रंगों की बौछारों से
धन्य वो फूल पलाश के
कान्हा संग राधिका जिससे
मतवाली होली खेलें ।

देवयानी नायक, झाबुआ (म.प्र.)

वृंदावन की होली

चलो सखी वृंदावन चलिये,
जहाँ रीत पुरानी होली की।।

केसर,टेसू के रंग बने,
सोने-चाँदी की पिचकारी,
जहाँ होली खेलें कुंवर कन्हाई,
राधा जू और बृजवासी।।

जहाँ होली होवे फूलन की,
और होली होवे लट्ठन की,
सरस लगे लड्डू की होली,
जहाँ रीत पुरानी होली की।।

बरसाने,गोकुल और मथुरा,
धूम मची है चारों ओर,
वृंदावन की कुन्ज गलिन में,
रास रचाये नंदकिशोर।।

चलो सखी वृंदावन चलिये,
जहाँ रीत पुरानी होली की,..!

साधना छिरोल्या, दमोह (म.प्र.)

होली के दोहे

उड़े रंग जज़्बात के, फिर भी आया फ़ाग।
मन में निसिदिन दह रही, जाने कैसी आग।1।

बारूदी सी गंध है, रची हवा में आज।
तार कहीं टूटे पड़े, सूना जीवन साज।2।

पिचकारी ना आज हो, रहे हाथ बंदूक।
सरहद पर चलती रहे, नहीं कहीं हो चूक।3।

जब तक दुश्मन है खड़ा, हमें कहाँ आराम।
भोर रक्त से हो रंगी, और वही हो शाम।4।

पवन वेग से उड़ चलें, सेना के ये बाज।
सीमा के उस ओर अब, रहें गिराते गाज।5।

मन के सब दुर्भाव अब, जलें आग के संग।
हिरदय से हिरदय तलक, लगे नेह का रंग।6।

अंतस में है मच रहा, होली का हुडदंग।
थाप ढोल सी बाजती, मन की आज उमंग।7।

चढी डोर पै उड़ रही, मन की आज पतंग।
मस्त पवन ने छेड़ दीं, जाने कैसी जंग।8।

सुनीता लुल्ला, हैदराबाद

आयो फागुन माह सखी

आयो फागुन माह सखी,
चल खेलें हम सब होली।

काहू का मुख भयो लाल,
काहू के मुख पर रोली।
चलो सखी मिलि के सुर में,
हम सब गायेंगे होली ,
कहीं बजै झांझ मजीरा,
कहीं भांग रस में घोली।

कान्हा बन घूमें गोपी,
देखो ले अपनी टोली।
राधा भी फिरती पीछे,
भरि कै रंगों से झोली।
सब देखै लीला हरि की,
राधा भी कितनी भोली।

घूमें मिलि नाचे गाये,
झूमें अरु खेलें होली।

डॉ सरला सिंह

होलिका दहन

जब भ्रष्टाचार रूपी
होलिका का होगा दहन
और ईमानदारी का चहुंओर,
होगा निर्वहन,
तब सही मायनों में
होगा होलिका दहन।।
जब गरीबी,बेरोजगारी औऱ महंगाई का,
होगा चीर हरण,
तब ही,
सही मायनों में
होगा होलिका दहन।।।

नवनीता दुबे "नूपुर" मण्डला (मप्र)

कैसे मनाऊँ श्याम होली

छाई है दुःख की बदली, कैसे मनाऊँ श्याम होली
देश में पड़ा है संकट, दुश्मन ताने बैठे हैं गोली
सरहद पर हो रही ख़ून की होली
किसी ने खोया है लाल अपना
हुई है गोद सूनी, कैसे मनाऊँ श्याम होली

इस ख़ूनी होली में
बहन की राखी हुई सूनी
कैसे मनाऊँ श्याम होली
खोया पति किसी ने अपना
माँग हो गई सूनी, कैसे मनाऊँ श्याम होली

देहरी पर बैठी है गोरी
राह निहारती पिया की
कैसे मनाऊँ श्याम होली
पिया न आए आ गई उनकी देह
सनी लहू से लथपथ, कैसे मनाऊँ श्याम होली

कहीं दरवज्जे खड़ी प्रेयसी
कब आए प्रियतम रंगने बाट जोहती
कैसे मनाऊँ श्याम होली
किसी की मेहंदी भी न छूटी
न रंग पाई पिया के रंग गोरी, कैसे मनाऊँ श्याम होली

अदिति रूसिया, वारासिवनी

रंग लगा ले

लाल,गुलाबी,या फिर हो नीला या पीला
इस होली चाहे जितना रंग लगा ले
पर एक दिन ये भी उतर जायेगा,
चल इस बार ऐसा लगाऊँ
तुझ पर प्यार का रंग ,
जो तू कभी न उतार पायेगा।
निमिषा लढ़ा
टेसु का रंग
गुजियों का संग हो
मन में उमंग हो
गीतों की बहार हो
टेसु का रंग हो
ठंडाई हो अबीर हो गुलाल हो
प्रेम हो स्नेह हो प्रीत हो
जीवन में अनुराग हो सृजन हो।

शैली जैन, बैतूल (म.प्र.)

होली गीत

होरी में जाये जा होरी रे होरी में
कर गव छलिया मोसे वरजोरी होरी में
होरी में जाये जा होरी

लाल गुलाबी नीलो पीरो
हाथन लये रंग हृरीरो
करिरा कर गव मो गोरों
होरी में

संग ग्वाल वालो की टोली
मैं बैठी थी अकेली भोली
अरे रंग गव चुनर संग सारी
होरी में

सास ननद मोहे देवे गारी
कैसे कहूँ मन बसों वनवारी
डर लागे सखि री भारी
होरी में

शक्ति रंग प्रीत को लेके
छलिया छलहै बाते देके
वाट तक़त मिलेहे गिरधारी
होरी में

बबिताचौबे शक्ति,दमोह (म.प्र.)

रँग रहा हूँ मैं

रँग रहा हूँ मैं तुम्हारे रंग में...
घुल रहे हो तुम भी मेरे संग में...

हैं पलाशी फूल भी दहके हुए
मौसमों में फाग का छाया नशा..
और तुम्हारी मदभरी सी ये छटा..
आँख भर देखा तो भर आया नशा..
मस्तियों में आ चढ़े परवान हम
फाग कब रहता सलीके, ढंग में... !!

रँग रहा हूँ मैं तुम्हारे रंग में...
घुल रहे हो तुम भी मेरे संग में...!!

आग सी तुम मैं समिधा सा पड़ा
प्रेम आहुति भी तत्पर दाह को..
मन भी है बेकल मिलन की आस में
देह भी बेकल गुलाली चाह को..
आज मर्यादाएँ भी अवकाश पर...
सब है जायज़ इश्क़, होली, जंग में ..!!

रँग रहा हूँ मैं तुम्हारे रंग में...
घुल रहे हो तुम भी मेरे संग में...!!

हेमन्त बोर्डिया

फिर से आई पागल, होली!

रंगो का बन बादल, होली,
फिर से आई पागल, होली!

यारों सी है, कभी भाई सी,
कभी है मां का आँचल, होली!

धोती, कुरता, अंगिया, चोली,
कंगना, बिछीया, पायल, होली!

पीड़ा मन की किसे बताऐ,
कुछ दिन से है घायल, होली!

कहाँ गई 'जय' वो पहले सी,
सुंदर, कोमल, श्यामल, होली!

जयकृष्ण चांड़क 'जय'
हरदा म प्र

होली के त्योहार पर

होली के त्योहार पर, यादें बैठी अंक,
विरह हृदय में जा लगे, मीठे-तीखे डंक,
सजन जी घर आ जाओ, प्रीत के रंग लगाओ।

सरहद पर होली जमी, दीवानों के संग,
खुद को लथपथ कर गये, बलिदानी के रंग।
तिरंगा ओढ़ के आया, मातरम वन्दे गाया।

चलो शहर को रंग लें, अभियानों के संग,
स्वच्छ रखें सुन्दर रखें, बदलें अपना ढंग।
हवा फागुन की आई, छटा अनुपम बिखराई।

गाल गुलाबी कर गया, होली का त्योहार,
गौरी देख लजा गयी, प्रियतम की मनुहार।
सजन जी अंग लगा लो, प्यार के रंग लगा लो।

कोई दुखी रहे नहीं, खुशियों के हों गीत,
इंद्रधनुष के रंग-सी, जीवन में हो प्रीत।
सभी को गले लगायें, चलो मुस्कान लुटाएँ।

नरेंद्रपाल जैन

होली है भाई होली है

होली है भाई होली है, बुरा न मानो होली है।
मस्तानो की निकली टोली करने आज ठिठोली है।।
रंग, अबीर, गुलाल जेब में, भर कर निकली टोली है।
भाईचारे और सौहाद्रता से, खेले हम ये होली है।।

तन भी भीगे, मन भी भीगे, अपनो के रंग गुलालों से,
पर किसी की आँखें न भीगे किसी के दुर्व्यवहारों से।।
मिलते सुंदर रंग, गुलाल है, अब तो सब बाजारों में।
फिर क्यों अपने हाथ भिगोयें हम गन्दे गोबर, नालो में।।

लेते है हम प्रण यही न किसी का दिल दुखाएँगे।
इन सुंदर रंग गुलालों से खुशियाँ हम बिखराएगे।।
जीवन है अनमोल, ये बात समझ लो आज सभी।
क्या बुरा गर प्रेम से मिलकर होली खेले हम सभी।।

लेना होगा प्रण हमें सारी दुश्मनी हम भुलायेंगे।
एक दूजे से मिलकर गले, दोस्ती हम निभाएँगे।।
भक्त प्रहलाद से सीखे कैसे बोले मीठी बोली है।
हर बुराई का नाश करने आई पावन होली हैं।।

बुराई पर अच्छाई का प्रतीक का पर्व होली है।
हम भी खेले तुम भी खेलो रंगों की ये होली है।।
होली है भाई होली है भरकर लाई खुशियों की झोली है।
होली है भाई होली है,बुरा ना मानो होली है।।

निधि रूसिया बड़ेरिया, बैकुंठपुर

जाने क्यों?

नहीं आता कोई बरसों का बिछड़ा
अनायास नहीं कोई राह चलते मिल जाता
नहीं होते चमत्कृत
नहीं पहचान झांकती
उन आँखों में जो बहुत अपने थे कभी,..

गोया, चाहते भी नहीं हम कि ले पहचान कोई,
लग जाये गले अपने
कुरेद दें कोई बात
खोये हुए दिनों की होली का कोई रंग,..
भिगों दे मन का आँगन कोई लड़ी चैता की,
गुनगुना उठें होंठों पर
हां,रास आ गयी है यह खामोश उकताहट,
अच्छा लगता है सुनकर,
समय और सुविधाओं के हैं हम बंधुआ मजदूर,..
फिर भी जाने क्यों,
आज भी मन में है कहीं एक कामना,
कि बंद कमरे के झरोखे से,
आ जाये थोड़ी हवा फाल्गुनी,...
मंजरियों को रिझाती कोकिला की मीठी बोली,
झुंड में फाग गाते डफली-मंजीरे की धनक,
पिचकारी की कुछ बूंदें,
राई-हींग की सोंधी महक, बच्चों के कोलाहल....!
हां! अच्छा लगता है ये सब,.....! जाने क्यों???

पूनम (कतरियार)

होली के रंग जीवन के संग

धरती से अंबर को देखो,
उड़ रही है अबीर -गुलाल।
इन्द्रधनुषी रंगों के संग,
होली की आई बौछार।

नन्हों की पिचकारी में है,
पावन रंगों की भरमार।
युवाओं की टोली में है,
घूम -धड़ाका और धमाल।

वृद्धों के हाथों में देखो,
आशीषों से भरी गुलाल।
अपनों की खुशियों में देखो,
पावन रंगों की बौछार।

कोयल की हर कूक में सुन लो,
मीठी वाणी की झंकार।
कान्हा -राधा के संग देखो,
इस होली की नई बहार।

जीवन की खुशियाँ तब आएँ,
जब होली के रंग हजार।
वर्ष बाद आई है होली
संग में खुशियाँ लाई अपार।।

सीता गुप्ता दुर्ग छ. ग.

होली इस बार...!

नेह की वृष्टि,
टेसू, गुलाब, पलाश के,
रंगों में घुल मिलकर,
पड़ गई जब,
सजनी पर।
चली रंग बिरंगी पिचकारी,
भिगो कर दामन और चोली,
कामायनी की सुन्दर,
देह पर।
पवन मुस्करा रहा,
अबीर गुलाल से सिन्दूरी होकर,
पुलकित हो गया,
गौरी के तन को छूकर।
मेघ मल्हार गा रहे,
उमड़ घुमड़ कर,
रागिनी सी चल रही मंदाकिनी,
तन भी पुलकित,
मन भी पुलकित,
खेल साजन संग सजनी,
इस बार होली में,
प्रेम रस में डूबकर।

पिंकी परुथी "अनामिका"

हे पलाश

हे पलाश तरु तुम अनुपम,
तुम रहते हरदम योगी सम,
हरित पत्र संग जब रहते, निस्संग सदा ही तुम लगते।
देते प्रश्रय कीटों को तुम,
बदले में वे लक्ष तुम्हें हैं देते,
निष्काम भाव से वही लक्ष, तुम सहज ही जग को देते।
बेलपत्र से त्रिदल पत्र सुभग,
सहज ही आकर्षित करते,
माघ मास के प्रखर ताप से, वसुधा को शीतल करते।
जब ताप ग्रस्त वन-उपवन,
निष्पत्र हो जाते पतझड़ से,
समस्त ताप सहेज कुसुम में, निष्पत्र होते भी रंगों से भरता।
तरु-अन्तस की जिजीविषा,
हर स्थिति में है साहस देती,
केसरिया रंग में धरती को, एक नई आभा से है भरती।
हर कठिन समय में जीना जाने,
टेसू का केसरिया रंग बताता,
साहस-धर्म का प्रतीक बना, सन्तों और वीरों ने अपनाया।
सूरज की आभा से पूरित टेसू,
संग लेकर सेमल अमलतास,
झूम रहे हैं हो प्रफुल्लित, भरते मन में जीवन का विश्वास।

डॉ चन्द्रकान्ति आदित्य त्रिपाठी

प्यारी होली आई है

बजते नगाड़े, होली के प्यारे, डालों रंग गुलाल,
प्यारी होली आई है, रंग रंगीली होली आई है,..!

आओ सब मिलकर खेले, रंगों की आँख मिचोली खेले,
मस्तानों की टोली आई, सब की हमजोली आई
लगाये अबीर लाल लाल, प्यारी होली आई है,...!

खुशी की उमंग है. लाल पीले रंग है,
मस्ती की तरंग में, भीगा सारा अंग हैं
टमाटर से हुये गाल, लाल लाल, प्यारी होली आई है...!

साजन संग सजनी खेले, देवर संग भाभी खेले,
साली नखराली खेले, भइया संग भाभी खेले,
खेले सारे बाल गोपाल, प्यारी होली आई है.....!

मन मन की मिठाई खाओ, लड्डू और पेड़ा खाओ,
भांग की बरफी खिलाओ, रस भरी गुझिया खाओ,
गुलाब जामुन खाओ लाल लाल, प्यारी होली आई है....!

शरबत लाजवाब पियो, ठडाई बेहिसाब पियो,
भांग घोल घोल के, चोरी चोरी छिपा कर पियो,
नाचे गाओ मचाओ धमाल, प्यारी होली आई है,...!

मंजू सरावगी,रायपुर छतीसगढ़

होली,..एकता की थाती

फागुन की है बयार,
रंग रंगी प्रीत नार
अपने ही मन मंद-मंद मुस्काती है।
गाल है गुलाल रंगे,
नैन है बसंती रंगे
लतिका की ओट धर, पिय को बुलाती है।
भीगे तन मन संग
आज तो पिया के रंग
कोरी कोरी चुनरी से, फाग बरसाती है।
मांदल की थाप सुन
गीत की आलाप धुन
झूम उठा तन मन गोरी शरमाती है।
अबके फागुन आए,
सखा मीत साथ लाए
सभी के आवन पास खुशिया लुटाती है।
खेलो आज रंग होली
हँसी और हो ठिठोली
भेदभाव की न बोली हमको सुहाती है।
रंग भरी पिचकारी,
बरसाए बनवारी
राधा की है भीगी सारी खूब मन भाती है।
आओ सब करे प्रण
दोष का करे हरण
क्रूरता न हो कृपण एकता की थाती है।।

आरती डोंगरे

फागुन की धूम

फागुन की धूम मची, खिला है रंग होली का
निहारुँ छवि मन में घनशयाम मुरलीधर
कान्हा पुकारुँ तुमको गली-गली
आ जाओ अब कान्हा जहाँ पर रास होता था
लगी है रंगो की महफिल
जो तुम आ जाओ तो खुशी के फूल खिल जाए
गहरे रंग के फूल टेसू के
आ जाओ कान्हा रंगो भरी है पिचकारी
कहीं अबीर गुलाल उड़ाती ग्वालो की टोली ..
कहीं गोपियाँ भरे गागरी रंगो की
बजे है ढोल मस्ती में, कहीं मिलने का माहौल हो जाये।
कहीं रुठने-मनाने की रस्मे हों
मै प्रेम रंस मे भीगी मनमोहन पड़ी हूँ, बेसुध दीवानी...
भूले हो कान्हा, राधा को,
जरा बासुरी तो बजा जाओ
मन के ताप पर रंगो की बरसात हो जाये।
पढा कर प्रेम की पाती
कहाँ गुम हो गये हो तुम
पुकारुँगी तुम को छवि रख कर दिल मे सदा
भूलने न दूगी प्रेम रस की उमंग तरंगों को
सदा बरसाती रहूगी रंगो की प्यार भरी बौछारें।
खिले रहेगे प्रेम रंग होली के जरा दीदार हो जाए।।

बबीता कंसल, दिल्ली

होली उत्सव मनाइये

होली पर्व रंग संग,
मना लेवें भीगे तन,
हर मन खुशी छायी,
उत्सव मनाइये।

मिलजुल सब संग,
उमंगित हो मगन,
अवगुण का समन,
सभी कर जाइये।

लग जाये जब रंग,
अबीर गुलाल संग,
रंग पिचकारी तन,
मत घबराईये।

भाईचारा का त्योहार,
आनंद छाये अपार,
मतभेद त्यागकर,
गले मिल जाइये।

मनोरमा चंद्रा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

होलिया में करूँ मनुहार

होलिया में करूँ मनुहार
आजा पिया मोहे रंग दे
होलिया में नज़र उतार
आजा पिया मोहे रंग दे।

तेरे अंगना उतरी सजना
छेड़ दे दिल के तार
आज पिया मोहे रंग दे,..होलिया में,..

कोरी म्हारी चूनर धानी
मार पिचकारी की धार
आजा पिया मोहे रंग दे,..होलिया में,..

सूने मेरे मन के फेरे
थाम कलाई रंग डार
आजा पिया मोहे रंग दे,..होलिया में,..

लाज सरम का गहना पहना
नज़रें हैं चुनरी के पार
आजा पिया मोहे रंग दे,..होलिया में,..

जल्दी आना अब न सताना
रूठी तो देना होगा हार
आजा पिया मोहे रंग दे,..होलिया में,..

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

होली खेले मोहन

सनन-सनन फागुनी हवा, करती सनन-सनन।
भर-भर-भर मारे पिचकारी, होली खेले मोहन।

रंग- बिरंगे रंगों की,
आई है होली।
ग्वाल बाल संग लिए लकुटिया,
बने हुए हमजोली।
रक्तिम-रक्तिम नयन हुए
सलौने श्याम -बदन। भर-भर-भर,..!

नवनीत पय मिश्री की डलियाँ,
आज ना भोग लगावैं।
भाँग मिलाकर खीर बनाई,
गोपियाँ वही खावैं।
प्रेम के रंग में रंगे हुए,
झूमें रंगीला-रतन। भर-भर-भर,..!

होली है कह-कह चिहुंकते,
गली-गली में भागे।
ग्वाल-बाल संग धूम मचाते,
कान्हा आगे-आगे?
बच ना पाई ब्रजकिशोरी
किया लाख जतन। भर-भर-भर,..!

सुधा शर्मा
राजिम छत्तीसगढ़

मेरे बांके बिहारी लाल

मेरे बांके बिहारी लाल, हाथ में लेकर रंग गुलाल
हमारी गली आ जाना, हमारी गली आ जाना।। मेरे बांके ,..

आ जाओ कान्हा गुलाल लगाऊँ, रंगों से श्याम तुझको नहलाऊँ,
होली में दरस दिखाना। हमारी गली आ जाना।।

माखन मिसरी साथ में लाऊँ, बैठ सांवरे तुम्हें खिलाऊँ,
कान्हा प्रीत की रीत निभाना। हमारी गली आ जाना।।

कैसे हमको भूल गये हो, जब से कान्हा मथुरा गये हो,
होली में भूल ना जाना। हमारी गली आ जाना।।

हरा लाल पीला रंग ना भाये, तुम बिन कोई संग ना भाये,
मोहे सांवरे रंग लगाना। हमारी गली आ जाना।।

ग्वाल सखा श्याम बाट निहारे, सखियन ठाड़े बांह पसारे,
आकर सबको गले लगाना। हमारी गली आ जाना।।

मीरा "की विनती सुन लीजे, हे मनमोहन दर्शन दीजे,
अंखियन की प्यास बुझाना। हमारी गली आ जाना।।

मेरे बांके बिहारी लाल, हाथ में लेकर रंग गुलाल
हमारी गली आ जाना, हमारी गली आ जाना।।

केवरा यदु "मीरा"

होली भी आयेगी

दशहरा और दीपावली आकर चली गई
होली भी आयेगी चली जायेगी
पुनः दशहरा और दीपावली आयेगी
होली भी आयेगी
बुरे दिन आये और चले गये
अच्छे दिन आये और चले गये

पर अच्छाई कभी नहीं जाती
अतः होली कल है
जीवन ही जल है
लगाइये गुलाल
चेहरा कीजिए लाल लाल
पर ऐसे मत लगाइए रंग
खराब हो कोई शरीर का अंग
होली को होली त्योहार रहने दीजिये
कोई भी नशा मतकीजिये
अपनों को गले लगाकर गुलाल लगाइये
परायों को भी गले लगाइये, अपना बनाइये
होली बहुत ही खुबसूरत हो जायेगी
बहुत सारी खुशियाँ अपने आप मिल जायेंगी
होली खेलने के बाद जल्दी घर आ आओ
मां और बाबूजी जी का आशीर्वाद पाओ
देखिये आपके त्यौहार कितने खूबसूरत हो जायेंगे
अच्छे दिनों की उम्मीद न कर किसी से
ये तो यों ही अपने आप आ जायेंगे,..!

हरि प्रकाश गुप्ता
छत्तीसगढ़

इस होली,..

सूना मन
सूना आँगन
बिन साजन तेरे
खिले कैसे अबीर गुलाल
इस होली।।

न दे रहा साथ
ये तन न ये मन
न ही साथ तेरा साजन
खिले कैसे अबीर गुलाल
इस होली।।

कैसे भाए मीठी गुजिया
संग इतनी दवाईयाँ
बिन साजन तेरे
खिले कैसे अबीर गुलाल
इस होली।।

बस है होली नाम भर की
इस बार बिन साजन तेरे
सूना मन
सूना आँगन
खिले कैसे अबीर गुलाल
इस होली।।

मीनाक्षी सुकुमारन

फागुन गीत

प्रीत की रीत निभाओ बलम जी
हमको रंग लगाओ बलमजी।
भर पिचकारी रंगो चुनर म्हारी
गाल गुलाल लगाओ बलमजी।

मौसम वाली भीनी पाती
मन की अखियाँ पढ़ अकुलाती।
पोर पोर पुलकित तन मेरा
उड़न खटोला ह्रदय की बाती।
अंगना आओ, रास रचाओ
सुधिया न बिसराओ बलम जी।

पीड़ा संग मधुमास गुजारे
हमने कितने फागुन वारे।
रूप बासंती देख के मनवा
साजन तुझको आज पुकारे
देर करो न अबकी बारी
इंद्रधनुष बन जाओ बलमजी।

मधुमासी यौवन इठलाया
कलियों ने भी रूप सजाया।
अमवां डारी कोयल कारी
महुआ ने मादक फैलाया
रंग, अबीर, गुलाल ले आओ
आओ फाग मनाओ बलम जी।

डा.वर्षा चौबे, भोपाल

होली का स्वप्न

साजन जब मुस्कायेंगे, आँखों में आँखें डाल,
मेरे कानों में चुप से, कह देंगे मन का हाल,
मैं धीमे से ओढ़ चुनरिया, यूँ ही शरमाऊंगी,
तिरछी चितवन कर जायेगी, तब उनको बेहाल,..

साँसों से हर पल उनकी,
मधुर सुधा सी झरती है,
उनके स्वप्निल नयनों में ही,
मेरी यामिनी ढ़लती है,
आँचल पर ठहरी धूप की,
स्वर्णिम सी परछाईं ने,
उनके मनमोहक अधरों पर,
मला हो जैसे गुलाल, साजन जब मुस्काएँगे,...!

रँगों का त्यौहार ये होली,
भीगा तन मन भीगी चोली,
पिया मिलन की आस में गौरी,
भूल गई सब हँसी ठिठोली,
रग रग में व्याकुलता तारी,
सखियों की बातें भी भारी,
सपने से जागी तो पाया,
खुद को नीला लाल, साजन जब मुस्कायेंगे,...!

ब्रजेश शर्मा "विफल" झाँसी (उ. प्र.)

जब-जब होली आती है

जब-जब होली आती है
बचपन में ले जाती है
खेला करते थे भर-भर पिचकारी
मिलकर हम सखियाँ सारी
कभी जो की किसी से कुट्टी
गले मिल हो जाती बट्टी
न कोई शिकवा-शिकायत
बस होती सिर्फ शरारत
मस्ती भरी टोली धूम मचाती
गुलाल संग रंग जमाती
टेसू के फूलों का रंग
गालों पर मुस्कुराता
बड़े-बूढ़े मिल सब संग
नया रंग जम जाता
मिठाई, गुजिया की बहार
रंग हो जाये और गुलजार
नई नवेली सब नारी
रंगों का करती श्रृंगार
आँखों से करती पिया संग बतियाँ
प्रेम का प्याला भर-भर पिलाती
लज्जा से आँचल छुपाती
भोली ये बलाएँ अब कहाँ नजर है आती
अब भी खेले सखी संग होली
पर अब वो बात नहीं
बचपन की होली यादों में बिखेरे रंग कई।

आभा दवे

देखो होली आई है!

रंग बिरंगा माहौल बनाती
इठलाती ,बलखाती ,
देखो होली आई है,...!

उड़ रहे अबीर और गुलाब
रंगों ने मचाई है धूम
नाच गाना और मस्ती का समां
देखो होली आई है,...!

गुजिया और मिठाई की धूम
ठन्डाई की बड़ी है पूछ
नमकीन सेव ताक रहे
फल मेवे मुंह जोह रहे
देखो होली आई है,...!

नशे में डूबा हर मन
कहीं सुरूर शराब का है
कहीं रंग भांग का है
जरा सम्हल कर रंगना किसी को
कोई गांठ खुल ना जाये
देखो होली आई है,....!

नमिता दुबे

मन फागुन-फागुन हो जाये

लाल से पलाश दहके
हृदय में है मृदंग बजे
कुछ तुम बहको, कुछ हम
मन फागुन-फागुन हो जाये।

प्रीत है कुँवारी
देखे राह बावरी
कुछ तुम कहो, कुछ हम
मन फागुन-फागुन हो जाये ।

हवा गुलाबी हुयी
छु तुम्हे शराबी हुयी
कुछ तुम पीओ, कुछ हम
मन फागुन-फागुन हो जाये।

केश-पाश है खुले
अधरो पर है सुर ढले
कुछ तुम सुनो, कुछ हम
मन फागुन-फागुन हो जाये।

अनीता सिद्धि

होली का त्योहार

राधा है गोरी-गोरी और मैं हूँ काला
कान्हा के मन में बस यही मलाल
कैसे कर करूँ इस रंग भेद को दूर
सोते-जगते उठते-बैठते करें ख्याल

रहें उदास-उदास, मन गिरा-गिरा
न वंशी बजे न किसी को तंग करे
खाना-पीना, खेलना सब ही छूटा
देख-देख मैया यशोदा चिंता करे

आखिर मैया ने एक युक्ति सुझाई
अपने रंग में रंग ले उस छोरी को
युक्ति भा गई ले हाथ में पिचकारी
श्याम रंग रंग दियो राधा गोरी को

रंग दिया राधा ने भी कन्हैया को
ताली बजा-बजा के ठहका लगाई
देख लगा ऐसा जैसे सु-कुमारी ने
भांग की गोली-पे-गोली है चढ़ाई

तभी से ही तो सखे इस जगत में
रंगीला होली का त्यौहार मनता है
छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी में
रंग और भंग का दमखम जमता है

रेखा ताम्रकार 'राज' मंडला (मप्र)

आ गया है मधुमास

आ गया है मधुमास
मन में रंगीली आस
गोप गोपियन में आज क्यों अबोली है
ब्रज में मची है धूम
कान्हा संग घूम-घूम
गोपियों को ढूँढ रही, देखो ग्वालटोली है
छत की मुंडेर पार
छुपी बैठी ब्रजनार
अबीर-गुलाल भरी, एक-एक झोली है
घेर लीनी ग्वाल-टोली
केशर तिलक रोली
डूब रही रंग में कितनी ये भोली है
तिरछे कटीले नैन
गोपियों के तीखे बैन
नेह नहीं फिर ऐसी कैसी ये ठिठोली है
रंगीली है आज होली
रार छोड़ो हमजोली
ऋतु ये सुहानी मधु रस-रंग घोली है
भर पिचकारी मारी
रूपसी ये कौन नारी
भीग रही देखो कैसी कान्हा बरजोरी है
वृषभानु की किशोरी
कान्हा संग खेले होरी
केशर फुहार देखो, होली है , होली है ।

वंदना दुबे, धार (म.प्र.)

होली का उपहार

रंग उड़े, और उड़े अबीर गुलाल
घुली हवाओ में मस्ती की फुहार
अब की पिया होली खेलूँ तुम संग जी भर के,
सुधबुध खोई रंगी प्रीत के रंग में
आज मोहे पिया मिलन की आस,..

रंग उड़े,उड़े अबीर गुलाल
रंग दो ऐसे रंग से सांवरे मोरी चुनरिया
जो चढ़े तो फिर न उतरे, तुम पे बसे मेरे प्राण
राधा कहे कन्हैया से सुनो यशोदा के लाल,..

सात रंगो से रंग तो मोहे कुछ ऐसे
हर रंग बन जाए प्रीत भरा उपहार
एक दृष्टि जो मुझ पर डारो
लाज से सुनो गुलाबी हो जाए मोरे गोरे गोरे गाल,...

नीले-पीले हैं प्रिय रंग तुम्हे
इन रंगो के पुष्पों का उपहार जो मिले तुमसे
करूगी मैं इनसे आज श्रृंगार
सिंदूरी सांझ में छेड़ा जो तो तुम मुरली की तान
मंत्रमुग्ध सी खींची चली आऊ मैं नन्द के लाल,..

झूमे हरी भरी प्रकृति खिली कलियाँ भँवरे करते गुंजारे
तुम हो देवकी की दुलारे, मध्य एक लाल रंग ही शेष है
लाल चुनरिया प्रीत की दे दो तुम उपहार,..

प्रेम विशेष है अपना, बंधन पवित्र है ये जाने माने सारा संसार
उड़े रंग उड़े अबीर गुलाल
राधा रानी संग होरी में रास रचाये मेरे गिरधर गोपाल,..।

नवनीता कटकवार, बालाघाट (म.प्र.)

सबरंग

जीवन उमंग तुम
मन की तरंग तुम
तुम हो तो सबरंग
मन को लुभाते है

लाल,हरा,नीला,पीला
मन हुआ रे रंगीला
तुमसे जो मिले नैना
सब रंग भाते है

तन ये गुलाल हुआ
मन मालामाल हुआ
फागुन ये लागे प्यारा
चलो फाग गाते है

तुमसे लागी लगन
मन हुआ वृन्दावन
सपन सजीले सारें
रास रचाते है

एक राग एक रंग
बाजे मन की मृदंग
चलो प्रिया संग-संग
रंगों में नहाते है

नवीन जैन अकेला

होली खेलो प्रेम से

होली खेलो प्रेम से,
टीका बस लगाय।
हाथ जोड विनती करूँ,
झगडे मिटा दो आज।

सूखा गुलाल से होली ,
होली सब मनायें।
बूँद बूँद पानी की,
.हर कोई बचाते जाय।।

रँग पेंट और कीचड होली,
मत खेलो आप।
प्रेम और सद्भावना की,
मिशाल हो आप।।

परंपरा और प्यार से ,
गले मिल लो आज।
गंदगी और फूहड़ता का,
नाम मिटा दो आप।।

अर्चना कटारे
शहडोल (म.प्र

होली का रंग

तन गीला मन कोरा-कोरा
ऐसी भी कोई बात हुई।
भर पिचकारी मारे छोरा
लो रंगो की बरसात हुई।।

मैं राधा तू बनवारी
छेड़ न मोहे गिरधारी,
तक-तक मारे पिचकारी
भीग गई चोली मोरी।
मत कर कान्हा जोरी जोरा
रंग मैं तेरे रंगी हुई।
तन गीला मन कोरा-कोरा
ऐसी भी कोई बात हुई।

कलाई तूने मरोरी
मैं दूँगी मीठी गारी,
हूँ मैं तुझ पर बलिहारी
जाऊँ मैं वारी-वारी।
मत कर कान्हा जोरी जोरा
रंग मैं तेरे रंगी हुई।
तन गीला मन कोरा-कोरा
ऐसी भी क्या बात हुई।
भर पिचकारी मारे छोरा
लो रंगों की बरसात हुई।।

साधना मिश्रा, कसडोल

सांवरिया जी होली खेले

सांवरिया जी होली खेले, जब राधाजी के संग,
गुलाल उडी है तब वृन्दावन में, बरसाने में रंग..!
सांवरिया जी होली खेले...!!

राधा के मन को भाता है, मनमोहन का रूप..
मीरा के मन को रंगता है, गिरधर का ही स्वरुप,
गोपियाँ सब मिलके पी गई, श्याम नाम की भंग..,,
गुलाल उडी तब वृन्दावन में, बरसाने में रंग..!
सांवरिया जी होली खेले...!!

कान्हा की बाँसुरिया गाती, सप्त सुरों की मस्ती..
सुर के इकतारे से चलती भक्ति प्रेम की कश्ती,
रसखान के छन्दों से जागी, जब मन में नई उमंग...,,
गुलाल उडी तब वृन्दावन में, बरसाने में रंग...!
सांवरिया जी होली खेले...!!

प्रेम है भक्ति से भी बढ़के, ये गोपियन को सन्देश,
ज्ञान उद्धव का घायल हुवा, सुनकर यह उपदेश,
गीता ज्ञान सुनाकर जब भी, सन्त करे सत्संग...,,
गुलाल उडी तब वृन्दावन में, बरसाने में रंग...!
सांवरिया जी होली खेले...!!

कैलाश बिहारी सिंघल

सांवरे के रंग में

ऐसे रंगू सांवरे के रंग में सुनो,
जाऊं बरसाने उनके संग में सुनो,..!

प्यारी उनकी सूरत को देखूं बार बार,
ले लूं मैं बलाये उनके सिर से उतार,
मूरत पर माधव के मैं हो गई निशार,
होगा ना ये नशा किसी भंग में सुनो।
जाऊं बरसाने उनके संग में सुनो,..!

होली में तो कान्हा मेरा है यही मन,
रंग तेरे रंग में ये धरती और गगन,
मुरली की तान में तेरी झूमे ये चमन,
धीमे से हो गए स्वर मृदंग सुनो,
जाऊं बरसाने उनके संग में सुनो,..!

आओ अब धरा में नीलांबर मेरे,
संग ले चल मुझे भी पितांबर मेरे,
तुम ही तो हो धरती और अंबर मेरे,
तुम ही बहते हो लहू के तरंग में सुनो
जाऊं बरसाने उनके संग में सुनो,..!

जागृति मिश्रा 'रानी'

कैसे रंग लगाऊँ मैं?

तन भीगा, मन कोरा-कोरा, कैसे रंग लगाऊँ मैं?
चिन्तन-धारा बिखरी बिखरी, कैसे कदम बढ़ाऊँ मैं?

अहसासों का दम्भ भर रही, फैशन वाली तरकारी,
द्वि-अर्थी संवाद सड़कची, शिल्पों पर पड़ते भारी।
चलें खोखले दाव प्रेम के, केवल तन के अभिलाषी,
छल-बल का सौन्दर्य चाहते, शब्द नहीं है विश्वासी।।
अदला-बदली की दुनिया में, कैसे प्रेम निभाऊँ मैं?
तन भीगा, मन.!

त्याग तपस्या की मूरत था, बदला-बदला सु-परिवेश।
कठिन परिश्रम, सत्-निष्ठा का, रत्नाकर था, मेरा देश।
बुद्ध, वीर, जिन हर-ब्रह्मा की, प्रतिमा मन में बसती थी,
क्षमा, अहिंसा, सत्य-धर्म की, बोली मधुरिम बहती थी।।
आशाओं का हुआ खातमा, कैसे हर्ष मनाऊँ मैं?
तन भीगा, मन....!

परिणामों की रख-सम्हाल में, कातर-चर्या की बाधा।
पर-उपदेश कुशलता हेतु, चिन्तन, फागुन में आधा।
जीवन-मरु की रेत उड़ रही, आयु-वात के अंधड़ में,
अंजुलि जैसे जल-सी रिसती, देह, विलय के प्रांगण में ।।
काल-चक्र में उलझे पल-पल, कैसे धर्म निभाऊँ मैं?
तन भीगा, मन....!

गणतंत्र 'ओजस्वी'

रंगों का त्योहार

आओ मिलकर नाचें गायें
रंगों का त्योहार मनायें,

लाल,गुलाबी,नीला पीला
केसरिया गुलाल लगायें,

तरह-तरह के पकवान बनायें
चूडा-मठरी गुजिया खायें

सब रंगों में हम रंग जायें
एक दूजे को गले लगायें

आओ मिलकर नाचें गायें
होली का त्योहार मनायें

मीना विवेक जैन

होली आएगी

अब तो होली आएगी
खूब मजे दिलाएगी
गुझिया पापड़
चिप्स खिलाएगी।

रंगो की बौछार लाएगी
अब तो होली आएगी
हम रंगों में खूब नहाएँगे
सबको सराबोर कराएँगे
लाल हरे नीले पीले
सभी पे रंग उड़ाएँगे।

मिलकर गुझिया खाएँगे
तनिक नहीं शर्माएँगे
प्रेम रंग को दिल में भरकर
सबपे प्यार लुटाएँगे।।
होली के गीत सुनाएँगे
सभी मजे उड़ाएँगे।।

रचना उपाध्याय

नेह की बारिश

नेह की बारिश, रंगों की होली,
आ मिल कर के गायें, मुहब्बतों की बोली..
हंसी के फव्वारे
ढोल नगारे
आ कर के बजाले
सजी है यहाँ, दीवानों की टोली,
आ मिल कर के गायें, मुहब्बतों की बोली..
रहे न मलाल
लगा ले गुलाल
बात जो हो ली, वो हो ली,
आ मिल कर के गायें, मुहब्बतों की बोली..
सतरंगी रंग में
रंगना है सबको
शगुन होली का
करना है अब तो
बनूं मैं राधा, तू कृष्ण हमजोली,
आ मिल कर के गायें, मुहब्बतों की बोली..
हकीकी प्रेम में
खुद को सजालो
इश्किया रंग में
अनहद बजा लो
हवाएँ भी करती, बन के जोगन ठिठोली,
आ मिल कर गायें, मुहब्बतों की बोली!

रजनी शर्मा

बसंत-रंगोत्सव (ताँका पंच)

प्रकृति संग
महकत बसंत
विविध रंग
दिलों मे रंगाइए
खुशियाँ मनाइए।1।

होली पवित्र
हम भी तो पवित्र
अच्छा चरित्र
तब ही प्रसन्नता
जिससे सम्पन्नता।2।

होली प्रतीक
मूलको समझिए
युक्ति सटीक
आपसी प्रेम भाव
बुराईयाँ जलाव।3।

होली फाग
बस दिलों को पाग
प्रेम का राग
संग संग गाईए
दिलो मे समाईए।4।

भारत रंग
'अनेकांत'के संग
जीने का ढंग
दुनिया अपनाए
रंगोत्सव मनाए।5।

राजेन्द्र 'अनेकांत' बालाघाट

आओ कोई एक रंग चुने

आओ कोई एक रंग चुने ऐसा।
न हो कोई दूजा उसके जैसा।
छुप जाए कालिख़ बैर भाव की,
चढ़ जाए रंग प्रेम प्रीत का गहरा।
आओ कोई एक रंग...

धुल जाएँ रंज-ओ-मलाल।
उड़ाएँ खुशियों की गुलाल।
पी प्याला देशप्रेम मधुशाला से,
मद नशा राष्ट्र प्रेम छा जाए।
आओ कोई एक रंग...

प्रह्लाद बचे हम सबके मन भीतर।
ज्वाल उठे जो होलिका दहन की।
उस सँग हो जाए दहन होलिका,
तेरे मेरे सबके कुंठित मन की।
आओ कोई एक रंग....

विवेक दुबे "निश्चल"

गज़ब है रौनक

रंग बिरंगे गली मोहल्ले..रंग भरी सड़के शहरों की..
देखो केसी गज़ब है रौनक..लाल हरे पीले चेहरों की..

जिधर भी देखो धूम मची है, रंगों का त्यौहार है आया..
हँसी-ठिठोली, धमा-चौकड़ी..हर रंग अपने संग कुछ लाया..

कहीं पे गुजियाँ स्वाद बढ़ाती, कहीं ठंडाई रंग जमाती..
कहीं गूँजते गीत फ़ाग के.. कहीं टोलियाँ नाच दिखाती..

बच्चे चलते ले पिचकारी,रंग भरी सारि की सारी
हर रंग का रंग बढा देती वो.. रंग भरी मुस्काने प्यारी..

किसी रंग में प्रेम भरा है..किसी रंग में भरी है यरी..
हर रंग की अपनी सीरत है.. जिसकी जैसी हो तैयारी..

हर कोई हो मस्त झूमता..परवाह किसे आज पहरों की...
लाल गुलाबी चेहरे मानो.. लाली लिए कईं सहरो की...

रंग बिरंगे गली मोहल्ले..रंग भरी सड़के शहरों की..
देखो कैसी गज़ब है रौनक.. लाल हरे पीले चेहरों की...!

अंकित शुक्ला,खरगोन

होली की अभिलाषा

रंग भरो धूमिल मन में, तो होली है।
प्रेम हो जब जन -जन में, तो होली है।

उत्साह भरो नीरस जीवन में, तो होली है।
हरियाली हो विस्तृत वन में, तो होली है।

इंसानों में इंसान दिखे, तो होली है।
वृद्धों का सम्मान दिखे, तो होली है।

नफ़रत पर प्रेम चढ़े , तो होली है।
हम सबका देश बढ़े, तो होली है।

बेटा-बेटी सब संतान दिखे, तो होली है।
नारी अपनी पहचान दिखे, तो होली है।

नहीं कोई लाचार दिखे, तो होली है।
न कोई अत्याचार दिखे, तो होली है।

न कोई अशिक्षित अज्ञान दिखे, तो होली है।
सचमुच अपना देश महान दिखे, तो होली है।

पारसनाथ जायसवाल 'सरल'

होली मनायेंगे

शिकवा शिकायत नहीं किसी से
सब मिल गायेगे..
होली मनायेंगे..
हम होली मनायेंगे,...!

प्रीत के रंग की भर पिचकारी
रंग बरसायेगे
गले लाकर हम ये
दिल से गायेगे
होली मनायेंगे,...!

नफरत की हम तोड़ दीवारे
कलुष सारे मिटायेगे
लड्डू पेड़ा खाकर के
फिर धूम मचायेंगे
होली मनायेंगे,...!

अमर शहीदो की कुरबानी
को हम याद करेगे
देश के रंग में रंगे थे जो
उनको नमन करेगे
होली मनायेंगे,...!

मनोरमा रतले

आओ होली आज मनाएँ

आओ होली आज मनाएँ
खुशियों की बौछारों से
पिचकारी में रंग भरें हम, मुस्कानों की धारों से।

जीवन सबका महकाएँगे
सात रंगों की कतारों से
आज दिखाएँ न ई अदाएँ, रंगों के त्यौहारों से।

अपनी मीठी वाणी छोड़ें
जिसकी पड़ें फुहारें
चारों ओर दिखाई देंगीं, हमको नई बहारें।

अपनी सोच बदलकर हम
एक नया जहान बसाएऐंगे
इस होली में बढ़कर आगे, देश में शांति लाएँगे।

दोस्ती और प्यार बढ़ाएँगे
रंगबिरंगे गुब्बारों से
होकर गुजरेंगे सभी रास्ते, फूलों के गलियारों से।

एक दूजे को गले लगाकर
मल दें गाल गुलालों से
दुश्मन दोस्त ऊंचा अरु नीचा सबका, स्वागत करें फूलों के हारों से।

किरण मोर कटनी म.प्र

नेता जी संग होली

नेताजी पर हमने
हरा नीला
लाल पीला
रंग डाला
नेताजी के ऊपर
पड़ते ही रंग हो रहा था काला
हम भ्रमित थे
आश्चर्य चकित थे
ये कैसा चमत्कार
या जादू
तभी निकले वहाँ से
बड़े बुजुर्ग दादू
हमने उनसे ये सब बताया
अनुभव के आधार पर
समझाया
नेताओं के कारनामे काले होते है
बाहरी सफेद वस्त्र
दिखावटी
उजाले होते है
इस लिए अंदरूनी
प्रभाव से
बाहरी रंग बदल रहे है
सावधान सावधान
ये नेता हमें ही छल रहे है

मुकेश मनमौजी, छपारा (म.प्र)

फागुन की बयार

फ़ागुन की बयार में,
रंगों के ख़ुमार में,
मस्ती की फुहार में, चलो भीग जाइये।।
रंगों की रंगोली में,
ख़ुशियों की होली में,
मस्तों की टोली में, चलो मिल जाइये ।।
उमंग की गेर है,
सभी सवा-सेर है,
भांग के नशे में, चलो मस्त हो जाइये ।।
न कोई लड़ाई है,
सब तरफ ठंडाई है ,
अबीर गुलाल से अब, चलो सराबोर हो जाइये ।।
बुरा न मानो होली है,
प्रेम की मीठी बोली है,
ज़ात पात भूल कर चलो, अब एक हो जाइये ।।
चारों और रंग हैं,
होली का हुड़दंग है,
अपनों को साथ लेकर, चलो रंगीले हो जाइये ।।
होली के त्यौहार में,
अपनों की मनुहार में,
सजनी के प्यार में, चलो मादक हो जाइये ।।

डॉ वासिफ क़ाज़ी

देश की होली

उड़े गुलाल क्षितिज पे छाए, भोग मिठाई कुछ ना भाए।
सुन सखी सीमा के गुंजन, रग रग में ही जोश समाए।

भरी हूई है हुक हृदय में, करने को शिव तांडव ।
घर के भेदी स्वाहा हो और मरे आँतकी रावण।

प्यार दुलार की राह पे चल कर, बार-बार ही ठोकर खाई
आज लहू से रंगा ललाट रंणचंडी मुझमे है समाई।

गूँजे जब यह विजय हुँकार सुन शत्रु थरथड़ काँप रहा
क्या होती वीरों की होली, सारा जग ये जान रहा।

हँसी ठिठोली हम वीरो की उन कायरों को सुनाना है।
मान की रक्षा के खातिर सीमा से ना बंधना है ।

है तत्पर सूत धरा के अपनी जान गंवाने को
खेलेंगे जी जान से होली देश की शान बचाने को।

शुभ्रा झा

रंग नहीं डारो

श्यामपिया मुझको ना पिचकारी मारो।
लाल गुलाबी रंग मुझ पर ना डारो।

और कोई रंग नहीं मुझको भाए।
श्यामबरन ही बनादो तो चैनआए।

श्याम सुंदर मेरे हो बांके बिहारी।
निज रंगमें रंगदे मुझको बनवारी।

ऐसे रंगना मुझको कभी छूटे ना।
नाता प्रेमभक्ति का कभी टूटे ना।

तुम मेरे हो कान्हा मैं तेरी राधा।
कभी मिलन में न हो कोईभी बाधा।

तेरा मेरा साथ ये सदा अजर रहे।
युगों युगों तक जोड़ी अपनी अमर रहे।

जब भी होली आए सभी याद करें।
सब प्रेम सदा अपना वे आबाद करें।

श्रीमती मधु तिवारी, कपसदा, दुर्ग,छत्तीसगढ़।

एक संदेश

बैर भावना मिटाकर नया एक संदेश देने!
मन से मन मिलाकर प्रेम को प्रवेश देने!

आ गया त्योहार होली फागुन के वेष में....
रंगों की बहार लिये सतरंगी परिवेश में.....
फागुन के माह में वह चुनर सतरंग ओढ़,
होली का दिखे रंग कोयल जब करें शोर।
कलुष भाव को मिटाकर नया एक संदेश देने!
मन से मन मिलाकर प्रेम को प्रवेश देने!

आ गया त्योहार होली एकता के वेश में.... !
पीली सरसो लहराई बंसती परिवेश में....!
अबीर और गुलाल से रंगीन हवा हर ओर,
पिचकारियों के रंग से रंगीन दिशा उठी डोल।
होलिका का कर दहन नया एक संदेश देने!
मन से मन मिलाकर प्रेम को प्रवेश देने!

आ गया त्योहार होली हिन्द के इस देश में.... !
विभिन्ना में एकता जहाँ हर परिवेश में....!

रचना सक्सेना, इलाहाबाद

रंगो की बहार आई

रंगो की बहार आई,
मस्तियाँ भी साथ लाई
चहुँओर चल रही,
हँसी ओ ठिठोली है

नवरंग झूम रहे,
आनंद को चूम रहे
भेदभाव मिटे ऐसी,
प्यार भरी बोली है

मौसम में रंगत है,
प्रीत भरी संगत है
गालों पे बनाई लाल,
रंग से रंगोली है

भाँग वाली है ठंडाई,
मनवा पे देखो छ़ाई
बुरा मत मानो बोले,
मस्ती भरी होली है

कैलाश सोनी सार्थक

होली मैंने भी मनाकर देखी

होली मैंने भी मनाकर देखी,
पड़ोसन गले लगाकर देखी।

मौका मिला आज होली का,
पत्नी को जरा जलाकर देखी।

मानो बुरा न जानम तुम अब,
होली की छूट अजमाकर देखी।

डंडे से तुम,.... हमको न पीटो,
तुमने ही कहा तो बुलाकर देखी।

बंद कर दिया कमरे में तो क्या,
खिड़की के पर्दे हटाकर देखी।

भले करो मेरा हाल बेहाल तुम,
पर अंग से अंग सटाकर देखी।

नाराज न हो मेरी प्यारी धनिया,
अंत मे तुम्हें तो मनाकर देखी।

होली मैंने भी,,,,,,,,,

आनंद पांडेय 'केवल'

यादों के अंतिम छोर से

यादों के अंतिम छोर से
मेरे वज़ूद के प्रथम सिरे तक
अक्सर तुम आतिथ्य लें
मेरे ख़यालो में बसते हो।
नदारद रह कर भी महसूस होते
हो तुम मेरे इर्द गिर्द उस दुपहर की
धूप से मेरे चेहरे के हर हिस्से पर...!!
सुनो न की छाँव बन खिल जाओ मेरे
आँगन के अमलताश से पीले फूलों की तरह
या रँग जाओ उन पलाश के फूलों के रँग
बन अबकी होली में..!!
की सरोबार हो जाऊँ तुम्हारे उस सुर्ख
पलाशी रँग में.....!!
अबकी होली न अबीर की चाहत
और न ही भाँग की खुमारी
बस चाहूँ तुम्हारी बातो का नशा
रँगत चढ़े मुझमें तुम्हारी शरारतों की
की हो जाऊँ थोड़ी गुलाबी मैं..!!
अबकी बरस जाओ मनपसन्द के
रँग बन मुझपर मलङ्ग फ़क़ीर
की बन जोगण तेरे रँग में फिर
तेरी फ़क़ीरी में खुद को रँग लूँ मैं....!!!

सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'

रंगों की टोली

अब के साजन होली में
इन रंगों की टोली में।
कह देना जो दिल में है
सब अखियन की बोली में।

हो जायें मदमस्त मगन
धरतीय, अम्बर और पवन
प्रीत मिलाना तुम हमदम
अब इस भांग की गोली में।

जब प्रीत की बरसा होती है
तब झूम के गौरी नचती है
सातों रंगों से हैं सजा
अब फागुन हमजोली में।

भीगा भीगा तन मन है
भीगा भीगा फागुन है
कर लेना तुम मनमानी
अपनी हंसी ठिठोली में।

नीता सक्सेना, भोपाल

संदेशा

तन से होली
मन से होली
दिल से होली खेलेंगे,

गालों पर
मल-मल गुलाल
उमंग से होली खेलेंगे।

होली का त्यौहार
विश्व भर में
संदेशा भेजेगा,

भेद भुलाकर
अपने सारे
रंगों सँग होली खेलेंगे।।

बीना शर्मा 'झंकार'

होली की मस्ती में

होली की मस्ती में डूबे हम सारे,
आओ प्यार का,स्नेह का रंग डाले।।

छूटे न कभी, मन से ये रंग,
राजनीति में घुल रहा चुनावी रंग।।

फैल रहा आज कहीं अपनेपन का रंग
तो कहीं वैमनस्यता का रंग।।

हम कविगण मिटा दें अपनी कविता से,
काम, क्रोध, ईर्ष्या भरा फरेबी रंग।।

अरमो "अरमान" रायपुर (छ.ग.)

प्रेम का उड़े गुलाल

प्रेम का उड़े गुलाल, लाल-लाल दोनों गाल
प्रेम रंग में ही रंग आज सब जाइए

हरा पीला काला रंग, सब पे ही डाल कर
होली का त्यौहार आज, खुशियाँ मनाइए

मन में उमंग लिए, अपनो को संग लिए
भूल सारे द्वेष भाव, फाग गीत गाइए

मुरली मनोहर से, राधिका जी कह रहीं
कभी भी न छूटे रंग, ऐसा ही लगाइए

इति शिवहरे

होली

मैं,
उसकी
उसके लिए,
उसके प्रेम के रंगों की
छटाओं को
अपने में बिखेरती
उकेरती विभिन्न चित्र प्रतिकृतियों को,
अपने मानस में
स्थापित कर सदा के लिए ।।
होली
मैं,
उसकी,
उसके द्वारा रचित
एक 'निर्मिति'।

डॉ. सुकेशिनी दीक्षित

सूना आँगन हुआ किसी का

सूना आँगन हुआ किसी का
कोख माताओं की कहती है।
लाशें बिछने दो चौरासी,
प्राणों की बोली लगने दो, दुश्मन की होली जलने दो ।।

मेहंदी और महावर रोता ।
सिन्दूर माँग का वेसुध है ।
कजलाने मत दो शोलों को,
सीने में इन्हें धधकने दो, दुश्मन की होली जलने दो ।।

महाराणा, शिवा का शोणित
अभी रगों में बहता है
भुजाएँ काटो कायर की
आस्तीन सांप मत पलने दो, दुश्मन की होली जलने दो ।।

सदियों तरसेगी वह राखी
प्रणय सूत्र भी विरहित है
डूब गई है शोक में ममता
आँसू को मत छलने दो, दुश्मन की होली जलने दो।।

शैशव हुआ अनाथ किसी का
ज़िगर भी देख यह रोया है
अब यही तिरंगा कहता है
चिताएं दिल में धधकने दो, दुश्मन की होली जलने दो

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा) इंदौर (म.प्र.)

होली है

उलझे रिश्ते, सँकरे रस्ते
जितना चलते उतना फँसते
जीवन की तपती दोपहरी
बैठ कहीं पर कुछ सुस्ता लूँ, तो होली है!

घर आँगन के बीच फँसी
चकरघिन्नी सी घूम रही
जीवन की आपाधापी से
कुछ पल अपने लिए चुरा लूँ, तो होली है!

रंगों की इस भीड़ में कितने
बेमानी रिश्ते जीवन के
बेरंगी सपनो-अपनों से
अपना कोई रंग चुरा लूँ, तो होली है!

दुनिया की इस रंगीनी ने
मुझे छुआ नहीं पल भर
अनजाने लोगों के
दिल में जगह मिले, तो होली है!

जाएगी आँखों के सपनों की
आस लगी बस कल पर
देखे-अनदेखे सपनों को
सच करने की राह मिले, तो होली है!

मन से मन के
तार मिले
हर घर
खुशियों के फूल खिलें, तो होली है!

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

सुहानी होली

मोहन ग्वालों के संग सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।

रंग रंग के फूल सखा सब गोवर्धन से लाए,
कूट पीस कर रंग बनाया और मन में हर्षाए।
खुश जैसे जीते जंग, सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।।

यमुना तट पर नटखट टोली के संग आए कन्हैया,
श्यामबरण पीताम्बर धारी मोहन दास रचैया।
और छेड़ी मधुर तरंग सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।।

बंशी की प्यारी धुन सुन कर, गोरी मन हर्षाई,
लोक लाज को छोड़ दौड़ कर यमुना तट पर आई।
हित उठती अजव तरंग सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।।

राह निहारें मोहन तब तक आ गई राधा प्यारी,
देख राधिका कृष्ण मुरारी भर लाए पिचकारी।
बरसाए नेह के रंग सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।।

अंग अंग रंग गए राधा के, रंग गई चूनर सारी,
कुंज गलिन में राधा के संग खो गए कुंजबिहारी।
हुए नेह के रंग सरंग, सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।।

रावत श्याम रंगे राधा रंग, श्याम रंग में राधा,
होली में वरजोरी हो गई, बनी रही मर्यादा,।
फिर बही नेह की गंग, सुहानी होली में,
लिए फिरें ढोल मिरदंग सुहानी होली में।।

भरत सिंह रावत भोपाल

Life के रंग

हर रंग की है अपनी प्रकृति
हर रंग का अपना flavour
रंगों से भरी इस life में है
हर दौर का अपना तेवर

मासूम सा बचपन खिला खिला
जैसे पीले पीले टेसू bright
बचपन ही तो दौर था जब
कोई wrong नहीं था सब थे right

गुलाब से महकते यौवन में
वो प्यार, झिझक सब pink pink
जब छोड़ मझधार वो चले गए
प्यार की नैया हो गई sink

फिर अकल ठिकाने आई जब
career पर किया full focus
दुनियादारी ने फिर समझाया
ये प्यार व्यार है सब bogus

धीरे धीरे इस दुनिया का
हर रंग देखा हर ढंग देखा
मैंने अपने भीतर भी तो
जज्बातों का इन्द्रधनुष देखा

कभी सच्चे प्यार को पाकर मैं
यूं लाल हुई ज्यों red rose
कभी पाखंडी दुनिया के लिए
मन के किवाड़ कर दिए close

कभी लगता सबकुछ साफ है
सब सुंदर,स्वच्छ और pure white
कभी घोर निराशा ऐसी हो ज्यों
काली अमावस बिन tubelight

कभी खुशियाँ ऐसे लहलहाएँ
सावन में जैसे हरे हरे trees
कभी दुख डंडा ले दौड़ा आए
जैसे भागी हूँ बिन भरे fees

जीवन की भागमभाग में
जहां देखो, बस वहीं stress
फिर सोचा,क्यों ना इस होली में
बिंदास जिएँ, रहें careless !

होली के रंग ज्यों पानी में
पड़ते ही हो जाते dissolve
मैं तुम में और तुम मुझमें जो
घुल जाओ तो सारी problem solve!

- कृति गुप्ता, नई दिल्ली

न रहे बेरंग

आज अरसे बाद
होली को लेकर कुछ भाव उठे मन में,
सच कहूँ तो होली के रंगों को
मैं सालों पहले छोड़ आई थी,
जिंदगी के उस पड़ाव के साथ
जिसे हम बचपन कहते हैं,
जब होली के रंगों के लिए साल भर
इंतजार किया करती थी,
क्यूंकि तब मुझे जिंदगी के अनगिनत रंगों का
अर्थ नहीं पता था,
आज सोचती हूँ तो लगता है
कि कितने रंग हैं जिंदगी में,
जिसे हम हर पल जीते हैं,
हर रोज हम एक नए रंग को महसूस करते हैं,,...!

बहुत छोटी थी
तब मुझे पसंद थी
रंग-बिरंगी फ्राकें,टाफियाँ,गुब्बारे,पैंसिल,
तितलियाँ, फूल,इंद्रधनुष और तिरंगा,
बस कुछ बेरंग थे तो वो थे,
पानी और हवा ,...,.....!

जब कुछ बड़ी हुई
तो कुछ नए रंग आए जीवन में,
जैसे सतरंगी सपने,
व्यवहार में भावनाओं के नौ रसो के नौ रंग,
प्रकृति के अनेक रंगों को समझा और जाना,
अंबर नीला,वृक्ष हरे, धूप सुनहरी,
शाम रतनार,रात काली,सुबह उजियाली,
बस कुछ बेरंग थे तो वो थे,
पानी और हवा ,...,.....!

फिर आया दिल में चाहत का गुलाबी रंग,
हाथों में मेंहदी का हरा रंग,
बदन पे हल्दी का पीला रंग,
फिर सुहाग के जोड़े का सुनहरा लहंगे के साथ केसरिया चुनरी,
हाथों में ऱंग-रंग की चूड़ियाँ,
माथे पर लाल बिंदिया के साथ मांग में सिंदूरी सपने,
बस कुछ बेरंग थे तो वो थे (आँखों के आँसू यानि)
पानी और हवा ,...,.....!

फिर आए जीवन में नए रिश्तों के रंग,
रसोई में नित नए मसालों और पकवानों के रंग,
जिम्मेदारियों के रंग
पल-पल बदलते अहसासों के रंग
एकपल में हंसी और दूसरे ही पल गम,
कभी मुस्कुराहट तो कभी फिर आँखें नम,..
बस कुछ बेरंग थे तो वो थे (आँखों के आँसू यानि)
पानी और हवा ,...,.....!

पर आज मैंने सोच लिया
कि फिर समेट लूंगी अपनी अंजुरी मे जिंदगी मे
अब तक मिले सारे रंग मिला दूंगी
अपने सुख दख के साथी आँसुओं को उनमे
और मल दूंगी अपने अपनों के गालों पर प्रेम से,
और बचे हुए रंगों को उड़ा दूंगी हवा में,
ताकि फिजाएँ रंगीन हो जाए,...
इस बार मैं जी भरकर खेलूंगी होली
जीवन के सब रंगों से
ताकि इस होली पर न रहे बेरंग ये
पानी और हवा ,...,.....!

डा. प्रीति सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन क्रान्ति का आरंभ

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

प्रथम अन्तरा शब्दशक्ति से सृजन शब्दशक्ति सम्मान 2017 भोपाल में आयोजित जिसमें विमोचत हुआ साझा संग्रह।

द्वितीय अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 इंदौर में आयोजित जिसमें विमोचत हुए 8 साझा संग्रह और 1 एकल पुस्तक।

महिला दिवस 2018 में विमोचित हुए वूमन आवाज साझा संग्रह, जिसमें शामिल रही 50 से अधिक महिलाएँ।

लघु पुस्तिका क्रान्ति का आरंभ हुआ सृजन समीक्षा से, जिसमें 49 किताबों का हुआ विमोचन।

इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का बालाघाट में विमोचन।

भोपाल में आयोजन हुआ वूमन आवाज अवार्ड का जिसमें 55 महिलाओं की 66 पुस्तिकाओं का विमोचन।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सहयोग से हिन्दी आन्दोलन को समर्पित 8 पुस्तिकाओं सहित 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन।

दिल्ली में अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 के आयोजन में 60 से अधिक पुस्तकें विमोचित व रचनाकार सम्मानित।

दिल्ली में मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019 के आयोजन में 30 से अधिक पुस्तकें विमोचन और रचनाकार सम्मानित

- मात्र ११ माह की अवधि से सेवारत
- दौ सो अधिक किताबें प्रकाशित
- ५०० से अधिक सम्मानित लोग
- १५० से अधिक एकल पुस्तिकाएँ
- लगभग १५ आयोजन इन ११ माह में
- ५ स्थायी अन्तरा शब्दशक्ति के सम्मान

978-93-5372-022-3

मूल्य- 135/-